अनुभूति कला की

लेकसिटी गेस्ट

सिमोना वोस्की

भारतीय स्कल्पचर आर्ट और इटली की कन्टम्प्ररी कला को जोड़ने की कोशिश कर रही है इटली की स्कल्पचर आर्टिस्ट सिमोना बोस्की। एक वर्ष तक भारत में स्कल्पचर का मर्म सीखने के लिए इटेलियन एम्बेसी की ओर से सिमोना को भेजा गया है। यह समय पूरा होने के बाद नवम्बर में दिल्ली स्थित इटेलियन एम्बेसी में सिमोना की साल भर की मेहनत की एग्जीबिशन लगेगी। सिमोना कहती हैं कि इटली में हम कला के बारे में जानते थे, मगर भारत में आकर जाना है कि कला क्यों है, कलाकार के मन में भावनाएं क्या होती हैं? सिमोना की देश भर में लगभग पचास एग्जीबिशन लग चुकी हैं।

जीवन नजर आता है

स्कल्पचर पर मेरा काम और अटेंशन देखकर इटली गवर्नमेंट ने मुझे यहां भेजा था। पिछले एक साल से भारत में ही रह रही हूं। तब की मेरी कला और आज की तुलना करती हूं, तो मुझे खुद ही बहुत अंतर नजर आता है। अबके चित्रों में जीवंतता नजर आने लगी है। मैंने शिव-पार्वती को भी स्कल्पचर में उतारा है। अभी और भी नया पैटर्न बनाने की सोच रही हूं।

हाथों में है हुनर

मकराना और उदयपुर आकर मैंने देखा कि कारीगर अधिकतर काम अपने हाथों से करते हैं। हमारा ज्यादातर काम मशीनों पर बेस्ड होता है। हाथों से करने के कारण ही यहां कारीगरों को हर बारीकी, हर भावना को बखूबी उकेरने आता है। मैं जब भारत आई थी, तब तीन महीने तक टूल्स नहीं आने के कारण काम शुरू नहीं कर पाई थी। अब तो उनसे बारीकियां सीख रही हूं।

बहुत कुछ सीखा है यहां से

उदयपुर और मकराना में रहकर मैंने जिंदगी को करीब से देखा है। यहां की महिलाओं के जीवन और कठिनाइयों को मैंने करीब से देखा है। यहां आना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है। लोगों के बीच रहकर मुझे लगता है कि मैं ज्यादा संवेदनशील हो गई हूं। यहां आकर हर व्यक्ति अपने मन को समझने लगता है।

रंगीला है उदयपुर

लेकसिटी के आर्टिस्ट बहुत अच्छे हैं, उनसे भी मैंने बहुत कुछ सीखा है। मैं अभी पुत्रा में रह रही हूं, वहीं मैंने अपना छोटा स्टूडियो बनाया है। इसके अलावा एक महीना बड़ौदा और एक महीना मकराना में बिताया है। इंडियन फेस्टिवल होली खेलने का मौका दूसरी बार मिला है, मैंने खूब एन्जॉय किया। मकराना में मुस्लिम शादी भी देखी थी, यहां के कस्टम बहुत अच्छे और हटकर है।